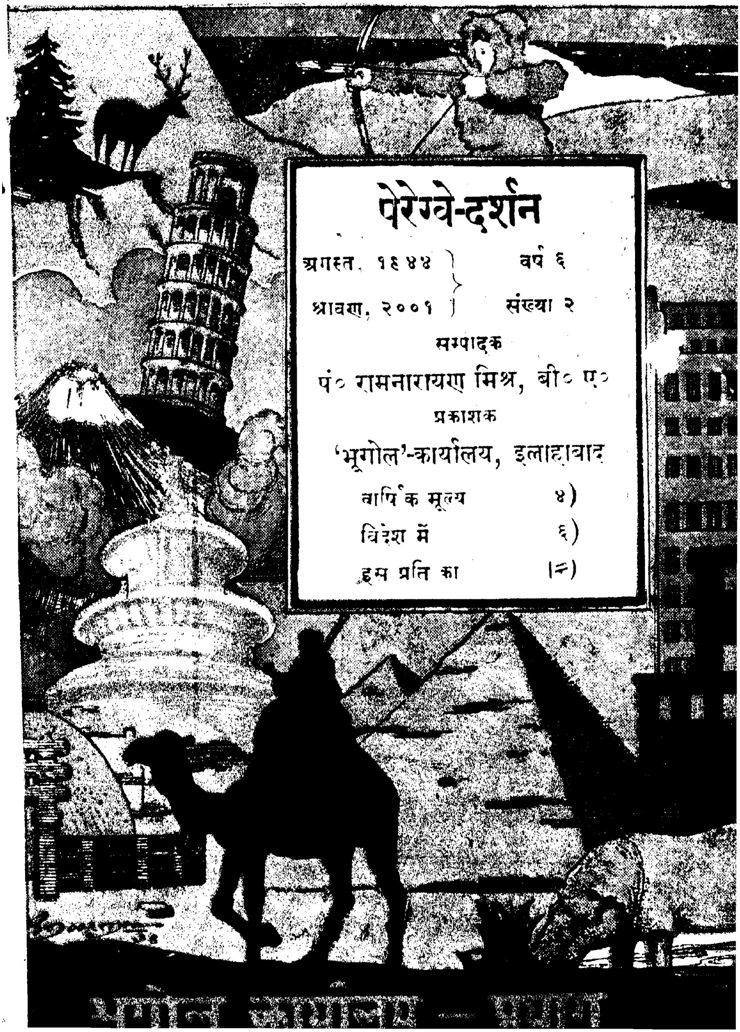
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—५८



पेरेग्वे-दर्शन

अगस्त, १९४४ } वर्ष ६
श्रावण, २००१ } संख्या २

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थित सीमा, तथा विस्तार

पेरेग्वे देश दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह दक्षिणी अमरीका का ऐसा प्रजातन्त्र है जो समुद्र-तट को नहीं छूता है। इसका क्षेत्रफल १,६६,३४० वर्ग मील है जो संयुक्त-प्रान्त का ड्योढ़ा है। लेकिन इसकी जनसंख्या केवल ६ लाख है जो कलकत्ता शहर से भी कम है। पूर्व में ब्रेज़ील दक्षिण-पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में अर्जेण्टाइना और उत्तर-पश्चिम में बोलिविया इस देश की सीमा बनाते हैं। समुद्र-तट से दूर स्थित होने पर भी पेरेग्वे के जलमार्ग बड़े सुन्दर हैं। एक जलमार्ग द्वारा यह देश अटलांटिक महासागर से जुड़ा हुआ है। पेरेग्वे नदी इस देश को उत्तरी सिरे से दक्षिणी सिरे तक पार करती हुई आगे बढ़ती है। नदी ने देश को दो भागों में बांट दिया है। पश्चिमी आधा भाग एलगेनचाको कहलाता है। पूर्वी आधा भाग एल पेरेग्वे ओरियण्टल कहलाता है। यदि हम इस देश की राजधानी एसंशन नगर से ३०० मील नीचे (दक्षिण) की ओर यात्रा करें तो ट्रेस बोकास

के पास परना और पेरेग्वे का संगम मिलता है। यहां से ८०० मील और दक्षिण की ओर बढ़ने पर रिओ डेला प्लाटा की चौड़ी एस्चुअरी मिलती है जो इस देश के अटलांटिक महासागर का द्वार है। हलके जहाज़ (जो बारह फुट गहरे पानी में चल सकते हैं) इस देश को संसार के दूसरे देशों से मिलाते हैं।

पूर्वी पेरेग्वे या पेरेग्वे ओरियण्टल की जनसंख्या अधिक घनी है।

इस भाग में कई निचली पहाड़ियां हैं जो बनस्पति से ढकी हुई है। सीमा के पास अधिक घना बन है। उत्तर और पूर्व की ओर पेरेग्वे राष्ट्र एकदम घने बन से घिरा हुआ है। पूर्वी पेरेग्वे में गांव और नगर अधिक होने से यहां रेलवे लाइनें भी अधिक हैं।

एल ग्रेनचाको या पश्चिमी पेरेग्वे नदी से बोलिविया की सीमा तक फैला हुआ है। इस भाग का क्षेत्रफल एक लाख वर्ग मील है। इधर भूमि भी उपजाऊ है। लेकिन बहुत थोड़े भागों में खेती होती है। मध्यवर्ती भाग बसने के लिये बड़ा अच्छा

है। यहां की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यकर है। यहां सदा भूमध्यसागर की सी जलवायु रहती है।

पेरेग्वे में निचली पहाड़ियों की एक श्रेणी है। यह श्रेणी उत्तर से दक्षिण को चली गई है। इसे कार्डीलेरा डी अमाम्बे कहते हैं। इस लिये यह उंचाई कहीं भी २००० फुट से अधिक नहीं है। यह परना नदी के दोनों ओर है। जिस स्थान पर परना नदी इसे काटती है वहीं ग्वेरा प्रपात हैं। बन के बीच में स्थित होने से यह प्रपात दुर्गम अवश्य है। लेकिन यह बड़े ऊँचे और सुन्दर हैं। प्रपात से ऊपर परना नदी मील चौड़ी है। लेकिन जहां परना नदी प्रपात बनाती है वहां इसकी चौड़ाई केवल ७० गज़ चौड़ी रह गई हैं। प्रपात की ऊंचाई ६० फुट है। इस प्रपात में न्याग्रा से कहीं अधिक जल है। जिस कन्दरा में जल गिरता है वहां कुहरा और जल-कणों का बादल सा छा जाता है।

परना और पेरेग्वे इस देश की दो प्रधान नदियां हैं। परना नदी ब्रेज़ील के गोपाज़ प्रान्त से निकलती है। इसकी लम्बाई २००० मील से ऊपर है जो अपनी गङ्गा

से कहीं अधिक लम्बी है। पेरेग्वे नदी भी ब्रेज़ील राज्य से निकलती है। यह दक्षिण की ओर प्रायः दो हज़ार मील बहकर परना नदी में मिल जाती है।

पेरेग्वे नदी के किनारे कई छोटे बन्दरगाह हैं। उत्तर से दक्षिण की ओर चलने पर क्रमशः पिलार, पोर्ट कसाडो, विला कन्सेप्शन, सैन पेड्रो, एमन्शन (जो देश की राजधानी है) विला फ्रांका और हया मैटा बन्दरगाह पड़ते हैं। परना नदी का प्रधान बन्दरगाह विला इन्कार्नेशन है जो दक्षिण की ओर स्थित है।

पेरेग्वे देश का बहुत बड़ा भीतरी भाग घने बन से ढका है। वृक्ष बहुत ऊँचे हैं और लताओं से जकड़े हुये हैं। इनमें तरह तरह के सुन्दर फूल फूलते रहते हैं। यहीं तरह तरह के सुन्दर पक्षी हैं। इस बन में यरबेल या यरवामाटी वृक्ष बड़ा मूल्यवान है। इसकी पत्तियां चाय के समान यहीं पीने के काम आती है। क्वेब्राचो की लकड़ी से चमड़ा कमाया जाता है। इन दोनों पर निर्यात कर लगाये जाते हैं। इस से देश को बड़ा लाभ होता है।

पेरेग्वे-दर्शन

परना का पठार दक्षिणी ब्रेज़ील के पठार का अंग है। यह पूर्वी पेरेग्वे के आधे भाग को घेरे हुये है। यह पठार बलुआ पत्थर का बना है। इसके ऊपर लावा की तहें बिछी हैं। इन तहों को वर्षा जल ने गहरा काट कर नद कन्दरायें बना दी हैं। पेरेग्वे नदी के पश्चिम में चौड़ा निचला भाग है। यह चाको कहलाता है। इसके ऊपरी धरातल पर नई तहें बिछी हैं। भीतरी भाग में पुरानी चट्टानें दबी पड़ी हैं। इस देश में संगमरमर, लोहा, तांबा, चूना और मैंगनीज़ पाया जाता है।

जलवायु

दिसम्बर, जनवरी और फर्वरी इस देश के सब से अधिक गरम महीने हैं। गरमी की ऋतु का औसत तापक्रम ८१ अंश और सरदी की ऋतु का औसत तापक्रम ६४ अंश रहता है। वार्षिक बर्षा ६२ इंच होती है और प्रायः साल भर होती रहती है। ऊंचे भागों में पाला गिर जाता है। लेकिन बरफ कहीं नहीं गिरती है। वर्षा बड़े ज़ोर से होती है। बिजली ऐसी चमकती है कि अन्धेरे बनों में भी उजाला हो जाता है।

कृषि और कारबार

पेरेग्वे का प्रधान पेशा खेती है। बड़ो नदियों के समीप की भूमि में खेती होने लगी है। भीतरी प्रदेश के दक्षिणी भाग में भी खेती होने लगी है। पूर्वी भाग की प्रधान उपज यरबेले (चाय के बगीचों) की माटो या पेरेग्वे की चाय है। गन्ना, तम्बाकू, कपास, मैंडिओका, क़हवा, रबर, फल, धान, लकड़ी और क्वेब्राचो है। सैने, पेड्रो, कन्सेप्शन प्रान्तों और ग्रेन चाको में गाय बैल पालने का काम होता है। इस देश में चरा-

गाह बड़े सस्ते हैं। जलवायु भी पशुओं के लिये अच्छी है। यहाँ प्रायः ५० लाख गाय बैल, ५ लाख भेड़ और २ लाख घोड़े हैं।

पेरेग्वे देश में भूमि बड़ी सस्ती है। जो भूमि राष्ट्र के अधिकार में है वह पांच भागों में बटी हुई है। प्रथम कोटि की भूमि विलोसा इपाने आदि कई जिलों में है। इसका मूल्य प्रति लीग १२०० डालर है। द्वितीय कोटि की भूमि सैनकास्मो यूनियन आदि ज़िलों में है। इसका मूल्य प्रतिवर्ग लीग ८०० डालर है। तृतीय कोटि की भूमि पिल्कामेयो नदी और बिला कन्सेप्शन के बीच में है। कुछ ग्रांडी चाको में पेरेग्वे के सामने है। इसका मूल्य प्रति वर्ग लीग ३०० डालर है। चतुर्थ कोटि की भूमि भी इन्हीं भागों में है। इसका मूल्य प्रतिवर्ग लीग २०० डालर है। पंचम कोटि की भूमि आबादी से बहुत दूर है। इसका मूल्य प्रतिवर्ग लीग १०० डालर है। भूमि का मूल्य चार वार्षिक किश्तों में दिया जा सकता है। एक वर्ग मील (१ मील लम्बा १ मील चौड़ा) चरागाह का मूल्य जिसमें १००० पशु रहते हैं,

जिसमें लकड़ी का घर घेरा भी शामिल है) प्रायः १०,००० डालर होता है। पेरेग्वे की जनसंख्या में स्विस, फ्रांसीसी, जर्मन, इटेलियन, जापानी, स्पेनिश और पुर्चगाली बस्तियां हैं। पर अधिकांश निवासी ग्वारानी जाति के रेड इण्डियन हैं। इन लोगों पर बाहरी सभ्यता का बहुत कम असर पड़ा है। अधिक गरमी पड़ने से यहां के लोग कम कपड़ा पहनते हैं। प्रायः सूती कुरता पहना जाता है। एक ढीला अंगोछा सर पर लपेट लिया जाता है। केवल उच्च कोटि के धनी लोग जूता पहनते हैं साधारण लोग नंगे पैर रहते हैं। धनी लोगों में प्रायः कोढ़ और गठिया की बीमारी हो जाती है। मूल निवासियों को ठीक ठीक भोजन नहीं मिलता है। ग्वारानी यहां की सर्व साधारण भाषा है। कुछ जिलों में तूपी भी बोली जाती है। नगरों के समीप रहने वाले स्पैनिश भाषा समझ लेते हैं। यहां की सरकार बाहर से आनेवालों और उपनिवेश बनाकर रहने वालों को उत्तेजना देती है। अधिकतर गोरे मज़दूर इटली से आते हैं। एसन्शन इस देश का प्रधान नगर और राजधानी है। यह पेरेग्वे नदी

के बायें किनारे पर स्थित है। नगर स्वच्छ है। यहां की सड़कें पक्की हैं। सड़कें सीधी हैं। कुछ सड़कें एक दूसरे को समकोण बनाती हुई काटती हैं। यहां की कई इमारतें बड़ी सुन्दर हैं। सरकारी महल, गिरजा घर, अस्पताल, थियेटर और रेलवे स्टेशन दर्शनीय है। रेलवे स्टेशन एक अंग्रेज़ी कम्पिनी की सम्पत्ति है। शहर के भिन्न भिन्न भागों में ट्रैम्वे और बिजली के ज़ोर से चलने वाली छोटी रेलवे लाइनें चलती हैं। शहर के घर प्रायः एक मंज़िला बने हैं। इनकी छतें चपटी हैं। इन पर प्रायः गमले रक्खे रहते हैं। बाहरी भाग के घरों में फूलों और फलों का बगीचा रहता है। इस नगर की जन संख्या सवा लाख है।

विलाटिका नगर राजधानी से ६० मील भीतर की ओर स्थित है। और रेल द्वारा जुड़ा हुआ है। यह बड़ा व्यापारी नगर है। इसकी जनसंख्या ३०,००० है। कन्सेप्शन नगर की जनसंख्या २५,००० है। विल्ला इन कार्नेशन, पेरेग्वारी सैन इस्टानीस्लाओ, लूके, काजापा कारापेक्वा दूसरे नगर हैं। इनमें प्रत्येक की जनसंख्या प्रायः १०,००० है।

———

देश दर्शन

क्वेब्राचो और यर्बा माटी

क्वेब्राचो बन का कटिबन्ध ७५० मील लम्बा है और अर्जेण्टाइना के चाको प्रदेश से लेकर पेरेग्वे तक चला गया है। इस प्रदेश की चौड़ाई कहीं २५ मील और कहीं २०० मील है। क्वेब्राचो के पेड़ पर नमी का बड़ा असर पड़ता है। क्वेब्राचो का पेड़ कुछ ऊंचे खुश्क भागों को पसन्द नहीं करता है। स्थायी दलदल भी इसके लिये अनुकूल नहीं पड़ते हैं। इसके सर्वोत्तम वन परना नदी से १० मील पीछे की ओर स्थित थे। यहां यह पेड़ तेजी से काट डाले गये। क्वेब्राचो की कई जातियां होती हैं। इसकी लकड़ी बड़ी कड़ी होती है। इसलिये इसका यह नाम पड़ा। क्वेब्राचो का अर्थ है कुल्हाड़ी तोड़ने वाला। इसकी लकड़ी खम्भों और रेलवे सलीपरों के लिये बड़ी अच्छी रहती है। सफेद क्वेब्राचो पश्चिम की ओर अधिक आर्द्र भागों में होता है। कुछ सड़े पेड़ों की लकड़ी कड़ी नहीं होती है। वह जलाने कोयला बनाने या पहिया बनाने के काम आती है। क्वेब्राचो के पड़ोस में दूसरे पेड़ भी उगते हैं। क्वेब्राचो का पेड़ धीरे धीरे बढ़ता है।

जो पेड़ कट जाते हैं उनके स्थान पर नये पेड़ लगाने का भी प्रयत्न नहीं किया गया है। कारखाने में क्वेब्राचो का सत निकालने अथवा लट्ठे बनाने के लिये बहुत से सलीपरों की आवश्यकता होती है। कारखानों को स्थापित करने में बहुत धन लगता है। जब एक बार कारखाने स्थापित हो जाते हैं तो उनको हटाया नहीं जा सकता। अतः जब पड़ोस की लकड़ी समाप्त हो जाती है। तब दूसरे भागों की लकड़ी कारखानों में पहुंचाई जाती है।

माटी या यर्बा माटी का पौधा परना के मध्य भाग में प्राचीन समय से जंगली उगता है। इसकी पत्तियों को इकट्ठा करना और तैयार करके दूसरे भागों में भेजने का काम पेरेग्वे में बहुत समय से हो रहा है। जिस तुम्बे में भरकर रेड इंडियन पत्तियों का रस पीते थे वह माटी कहलाता था। इसी से इन पौधों का नाम भी माटी पड़ गया। यह दक्षिणी अमरीका की चाय है। २५ अंश दक्षिणी अक्षांश के दक्षिण में दक्षिणी अमरीका में सब कहीं माटी चाय पी जाती है। इसके उत्तर में कहवा पिया जाता है। कुछ स्पेन और पुर्चगाल वाले भी (जो दक्षिणी अमरीका में रह चुके

हैं) यर्बा माटी पीते हैं। इस प्रकार यर्बा माटी के पीने वाले दो करोड़ से ऊपर हैं। जंगली पत्तियों को इकट्ठा करने के कारबार में इतना लाभ हुआ कि इस पौधे के बड़े बड़े बगीचे लगाये गये हैं। पत्तियों को पीने के लिये तैयार करने का काम कारखानों में होता है। यर्बा माटी के कारखाने एसेन्शन और दूसरे नगरों में हैं। पत्तियां खच्चरों की पीठ पर ढोई जाती है। पत्तियां तोड़ने का काम वर्ष में छः महीने होता है। तभी वे तोड़ने योग्य होती हैं। पेरेग्वे से प्रतिवर्ष प्रायः ५००० टन माटी चाय बाहर भेजी जाती है।

धर्म और शिक्षा

इस देश का प्रधान धर्म रोमन केथलिक है। लेकिन अन्य मतावलम्बियों को पूर्ण स्वतन्त्रता है। एसन्शन में विशेष रहता है। वह ब्यूनाज़ायर्स के आर्चि विशेष के आधीन है। यह देश शिक्षा में पिछड़ा हुआ है। कानून के अनुसार शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क हैं। लेकिन कई जिलों में अध्यापकों का

प्रबन्ध नहीं है। अतः ६० प्रतिशत लोग अपढ़ हैं। १९१६ से शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया। इस समय देश भर में लगभग ६०० प्राइमरी स्कूल हैं जिनमें प्रायः १ लाख विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। एसन्शन में ३ नेशनल कालेज, एक विश्व विद्यालय है। देश में ६ नार्मल स्कूल हैं।

आने जाने के साधन

पेरेग्वे देश में आने जाने के लिये पेरेग्वे सेन्ट्रल रेलवे प्रधान है। इसकी लम्बाई २७० मील है। यह देश के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में चलती है। यह एसन्शन से विलारिका और परना नदी के किनारे विला इनकार्नेशन को जाती है। परना नदी ही इस देश और अर्जेण्टाइना के बीच में सीमा बनाती है। नदी के इस पार इनकार्नेशन नगर स्थित है। दूसरी (अर्जेण्टाइना की) ओर पोसाडास नगर स्थित है। इन दोनों नगरों के बीच में नदी के ऊपर स्टीमर चलते हैं। यह स्टीमर रेल के डब्बों को चढ़ाकर इस किनारे से उस किनारे को पहुंचाते रहते हैं। पोसाडास से

ब्यूनाज़ायर्स को सीधो रेलवे लाइन जाती है। इस यात्रा में २ दिन लगते हैं। सेन्ट्रल रेलवे की एक शाखा लाइन विलारिका से सीमा के समीप इग्वामू नदी के किनारे तक चली गई है। यहीं ब्रेज़ील को जानेवाली रेलवे लाइनों का जंकशन है। रिओडि जेनरो से एसन्शन की रेल यात्रा ६५ घंटों में समाप्त हो जाती है। इसी लाइन की और कई शाखा लाइनें बन गई हैं। पेरेग्वे में समस्त रेलवे लाइनों की लम्बाई ७१५ मील है।

ब्यूना जायर्स से एसन्शन का जल-मार्ग वास्तव में पेरेग्वे के लिये प्रधान जल मार्ग है। परना और पेरेग्वे नदियों के बीच में देश का अत्यन्त धनी भाग घिरा हुआ है। यह दोनों नदियां देश के भीतर सवारी और माल ले जाने के लिये प्राकृतिक जलमार्ग बनाती हैं। नदियों में चलने वाले स्टीमर सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित रहते हैं। उनमें बिजली भी लगी रहती है। एसन्शन और ब्यूना जायर्स के बीच की यात्रा में बिजली के पंखे बराबर चलते रहते हैं। इस यात्रा में ५ दिन लगते हैं।

लेकिन एसन्शन से न्यूना जायर्स को जाने में भाग से सहायता मिलती है और यात्रा ३ दिन में समाप्त हो जाती है। पेरेग्वे का विदेशी व्यापार ब्रेज़ील, अर्जेण्टाइना और यूरेग्वे देशों में होकर स्टीमर द्वारा होता है।

संक्षिप्त इतिहास

जब स्पेन वाले पेरेग्वे में आये तब यहां रेड इण्डियन लोगों की कई जातियां थीं। लेकिन उन सब की भाषा एक (ग्वारानी) थी। यह लोग खेती करते थे और अपने विजेता स्पेन वालों के साथ रहने लगे। १५२७ ईस्वी में सैबेस्चियन कैबट यहां आया। उसने एस्पिरिटू नाम का किला बनवाया। १५३५ में जुआन (ह्वान) डो आयोलास ने एसन्शन नगर की नींव डाली। एसन्शन को स्पेनवालों ने अपना केन्द्र बनाया। यहां से पूर्व की ओर बढ़े और परना के उस पार ला ग्वायरा में पहुँचे। पश्चिम की ओर वेग्रेन चाको पहुँचे। कुछ ही समय में यहां के निवासियों को उन्होंने अपना दास बना लिया। पेरेग्वे नाम न केवल परना

और पेरेग्वे के द्वावा का पड़ा वरन् इसमें पड़ोस के और भी कई भाग शामिल था। १६२० ई० में पेरेग्वे में प्रथक सरकार बनी। १७७६ ई० तक यहां की सरकार पीरू की सरकार के आधीन रही।

इसके पश्चात् यह ब्यूनानायर्स के वायसराय के आधीन हो गया। १५४२ ई० में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये यह जेस्विट मिशन का आगमन हुआ। १२० वर्ष तक उनका यहां बड़ा जोर रहा। १७६६ में वे यहां से भगा दिये गये। १८११ ई० में पेरेग्वे ने स्पेन से मुक्त होने के लिये स्वाधीनता घोषित की। १८१४ में यहां डाक्टर फ्रेंसिया का निरंकुश शासन हो गया। १८४० में उसके मरने पर उसका भतीजा एण्टोनिया लोपेज़ शासक हुआ। उसके बेटे सेलानो लोपेज़ ने १८६४ में ब्रेज़ील पर चढ़ाई की। इससे ब्रेज़ील, यूरुग्वे और अर्जेण्टाइन एक हो गये। युद्ध कई वर्ष चला अन्त में १ मार्च १८७० को सोलानो लोपेज़ मारा गया और युद्ध समाप्त हो गया। इस युद्ध में १२ वर्ष से ऊपर उम्र वाले सभी पुरुषों को लड़ना पड़ा था। स्त्रियों से भी गोला बारूद ढोने का काम लिया

जाता था। इस युद्ध में पेरेग्वे की बड़ी क्षति हुई। युद्ध के आरम्भ में पेरेग्वे की जनसंख्या १३,३७,४३९ थी। युद्ध के अंत में यहां केवल २८,७४६ मनुष्य १०,६,२५४ स्त्रियां और ८६,०७९ बच्चे शेष बचे थे। १८७० ई० में पेरेग्वे की वर्तमान शासन प्रणाली का आरम्भ हुआ। कुछ समय तक ब्रेज़ील ने पेग्रेवे को अपने राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया। ब्रेज़ील ने युद्ध का ४,००,००,००० पौंड हर्जाना मांगा जो पेरेग्वे कभी नहीं दे सकता था। १८७६ में ब्रेज़ील की सेना पेरेग्वे से हटा ली गई। अर्जेण्टाइना और ब्रेज़ील की पारस्परिक स्पर्धा से पेरेग्वे स्वाधीन बना रहा। समय समय (१८८१ ई० १८९४ ई०, १८९८ ई० १९०४ ई० १९०८ और १९०९ ई० में) पर यहां क्रान्तियां अवश्य हुईं पर इनसे प्रजातन्त्र पर कोई स्थाई प्रभाव न पड़ा। १८९४ और १८९८ ई० के बीच में बोलिविया से सीमा सम्बन्धी झगड़ा हुआ। लेकिन वह शान्तिपूर्वक तय हो गया। १९१४–१९१८ की बड़ी लड़ाई में पेरेग्वे तटस्थ रहा। अन्त में उसका रुख मित्रों की ओर हो गया। राज्य के कई जर्मन कर्मचारी अलग

कर दिये गये। १६१६ ई० में पेरेग्वे राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) का सदस्य हो गया। १६२६ ई० में बोलविया से सीमा सम्बन्धी झगड़ा फिर उठ खड़ा हुआ। १६२८ ई० में चाको प्रदेश के लिये पेरेग्वे और बोलविया एक दूसरे से लड़ने लगे। वाशिंगटन के पैन अमरीकन सम्मेलन ने उन्हें कुछ समय के लिये लड़ने से रोक दिया। १६३२ ई० में यह प्रश्न फिर उठा। १६३३ में पेरेग्वे ने युद्ध घोषित कर दिया। दोनों देश लड़ाई का सामान संयुक्त राष्ट्र अमरीका और योरुप से मंगाती थी। यह सामान बनाने वाली कम्पिनियां चाहती थीं कि युद्ध जारी रहे और उनके सामान की बिक्री होती रहे। अन्त में १६३८ ई० में बोलिविया और पेरेग्वे के बीच में सीमा सम्बन्धी समझौता हो गया। वर्तमान युद्ध में पेरेग्वे ने तटस्थता घोषित की।

चाको इण्डियन लोगों का भोज

चाको इण्डियन लोगों को भोज कराने में बड़ा आनन्द आता है। भोज में सम्मिलित होने के लिये दूर दूर से इष्ट मित्र आते हैं। इन लोगों में सात धार्मिक भोज होते हैं। कुछ अनिश्चित समय पर भी भोज हो जाया करते हैं। यनमन भोज उस समय होता है जब लड़की बाल्यावस्था से युवावस्था में प्रवेश करती है। जब लड़का बाल्यावस्था से युवावस्था में प्रवेश करता है तब वैश्व भोज होता है। वसन्त, ग्रीष्म अथवा शरद् के उपलक्ष में क्यैय भोज होता है। युद्ध आरम्भ करने के पूर्व भी भोज दिया जाता है। विवाह और मृत्यु के समय भी भोज दिया जाता है अतिथि लोगों के स्वागत के लिये भी भोज दिया जाता है।

यनमन के समय लड़की बाल्यावस्था के भेष को छोड़ कर प्रथम बार बड़ी स्त्रियों के वस्त्र पहनती है। वह आभूषणों से भी सजाई जाती है। इस अवसर पर उसके बैठने के लिये एक मंडप तयार किया जाता है। उसके पास ही स्त्रियां नाचती हैं। स्त्रियों के हाथ में एक बेत रहता है। इसके सिरे पर हिरण के खुर बंधे

रहते हैं। वे गाती हुई इन खुरों को पृथिवी पर पटकती रहती है। वे नाचती हुई एक गोल घेरा बनाती हैं। घेरे के बीच में एक बुड्ढी स्त्री उच्च स्वर से गाती रहती है और बेंत को पटकती रहती है। वह अपने शरीर को विचित्र ढंग से मरोड़ती रहती है। कभी कभी ऐसा भास होता है मानो वह अपने हाथ से अपने बाल उखाड़ लेगी।

पुरुष एक अलग घेरा बनाते हुये गाते और नाचते हैं। उनके हाथ में सूखी लौकी या तुम्बा रहता है। इसमें सूखे बीज और घोंघे भरे रहते हैं। लड़के भूत पिशाचों का भेष बनाये हुये और शुतुर्मुग के पर खोंसे हुये इधर उधर घूमते हैं और चिल्लाते रहते हैं। लेकिन जब वे लड़की के समीप घेरा बनाते हैं तब स्त्रियां उन्हें भगा देती है। वैंक्य भोज के समय दिन रात नगाड़े बजते रहते हैं। हिरण की भीगी खालों को मिट्टी के घड़ों पर चढ़ा कर नगाड़े बनाये जाते हैं।

भिन्न स्वरों के लिये इनके भीतर भिन्न मात्रा में जल भरा रहता है। इस अवसर पर दंगल भी होता है और पहलवान कुश्ती लड़ते हैं। वास्तव में वैंक्य नगाड़े

को कहते हैं। इसी से इस भोज का यह नाम पड़ा। ग्रीष्म ऋतु के भोज में नशा भी पिया जाता है। वैंक्य भोज के समय केवल पुरुष नाचते हैं। यह फसल या ऋतु के उपलक्ष में होता है। विवाह भोज के समय दूल्हा इस प्रकार आचरण करता है मानो वह वधू को चुरा रहा हो। नियत समय पर वह वधू को भगा ले जाता है और गांव के बाहर छिप जाता है। कुछ नवयुवक पीछा करते हैं और असफल होकर लौट आते हैं। इन थके युवकों के ऊपर स्त्रियां ठंडा जल छोड़ती हैं।

मृत्यु के एक महीने के पश्चात् दुःखित परिवार को सान्त्वना देने के लिये यह भोज दिया जाता है। इस समय जो भाषण दिया जाता है उससे प्रतीत होता है कि मृत आत्मा जो एक महीने तक उधर मडरा रही थी वह अब वहां से सदा के लिये प्रस्थान कर जायगी। युद्ध भोज के समय कई प्रकार के दंगल होते हैं। इन सब का यह उद्देश्य होता है कि युद्ध में भाग लेने वालों में साहस भर जावे।

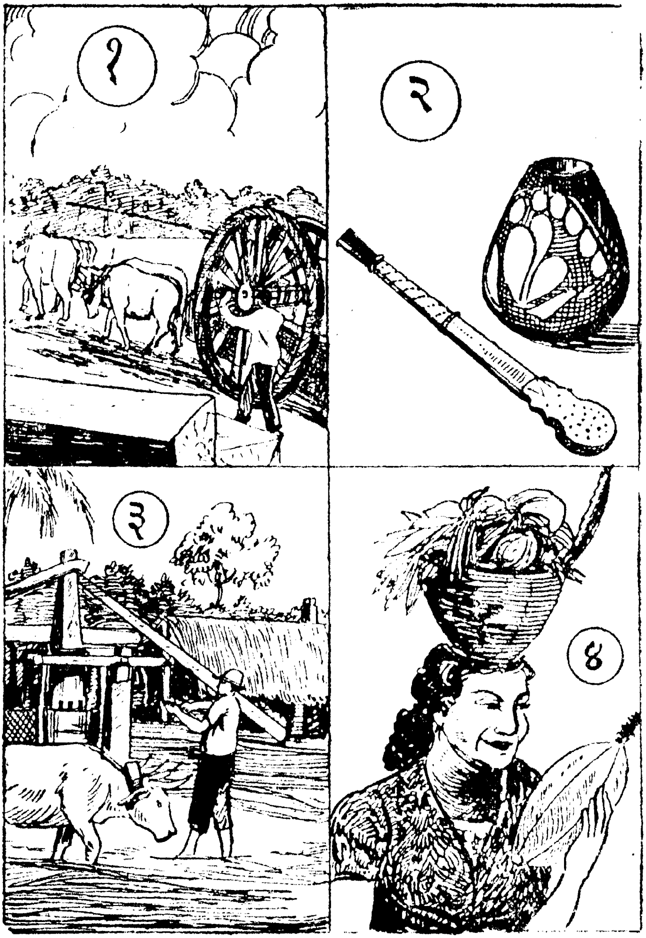
शिकार के पश्चात् अथवा अतिथि लोगों के उप-

लक्ष में भोज होता है। भोज की अवधि भोजन की मात्रा पर निर्भर है। स्त्रियों की टोलियां कन्दमूल, फल और शाक इकट्ठा करने में लग जाती हैं। पुरुष मछली मारने और पशुओं का शिकार करने में लग जाते हैं। भोज प्रायः रात्रि के समय होता है। दिन में गरमी भी अधिक रहती है। अंधेरी रात में आग जला ली जाती है और ताड़ की पत्तियों की मशाल तयार कर ली जाती है।

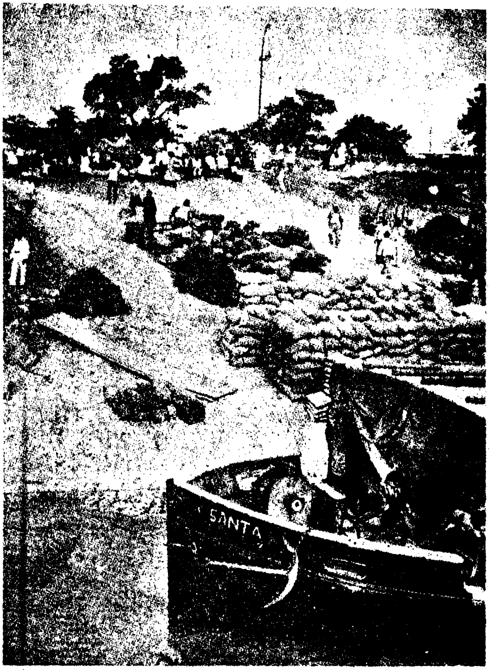
गांव प्रायः बन के खुले भाग में होता है। इसके पास ही एक दलदली छोटी नदी बहती है। सब कहीं ताड़ के वृक्ष रहते हैं। मकरकन्द और कद्दू आग में गाड़ कर भूने जाते हैं। हिरण या भेड़ की लाश आग के ऊपर टांग कर पकाई जाती है। सब धारा के गहरे कुंड में नहाते हैं। रात को सब लोग आग तापते हैं और कहानी सुनते हैं। भोजन के लिए पहले खुले स्थान में खाल बिछा दी जाती है। इन पर भोजन परोसा जाता है। सब लोग चटाइयों पर बैठते हैं। भोजन के पश्चात् सब लोग तम्बाकू पीते हैं। फिर से शराब पीते हैं। नशे में आकर सब लोग अपनी

अपनी कहानी बकने में लग जाते हैं कोई दूसरे को नहीं सुनता है। सूर्योदय होते ही उत्सव समाप्त हो जाता है फिर सब लोग छायादार स्थान में जाकर सोते हैं। इनमें जो लोग शिक्षित हो गये हैं अथवा ईसाई हो गये हैं वे पुरानी चाल को छोड़ते जा रहे हैं। इन लोगों की स्त्रियां भेड़ों को ऊन से मज़बूत कम्बल बुनती हैं। ऊन कतरने का काम साधारण कैंची से किया जाता है। धोने के बाद ऊन ताड़ के पत्तों या चटाई पर बिछाई जाती हैं। पहले ऊन ऐंठ कर कात ली जाती है। फिर इससे तरह तरह की रंगीन धारी वाले कम्बल बुने जाते हैं। डोरी बनाने का काम बहुत लोग कर लेते हैं। खालों से चटाई और बिछौनों का काम लिया जाता है। कुछ खालों से पैने बनाये जाते हैं। हिरण की खाल की पतली धज्जियों को ऐंठ कर धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) बनाई जाती है।

———



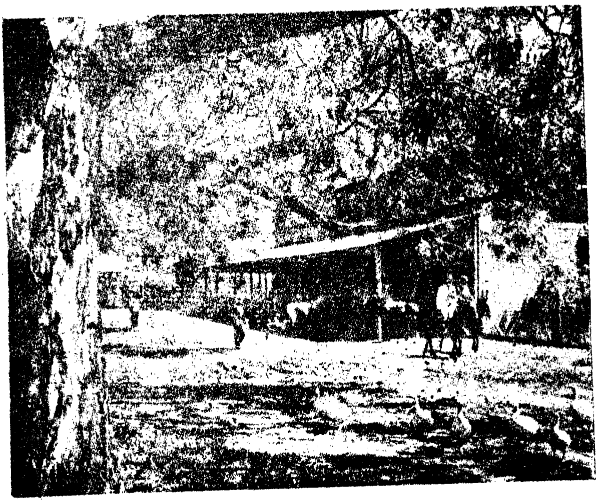
१—बैलों से लट्ठे ढोये जा रहे हैं। २—माटी (चाय) पीने का चम्मच और तुम्बा। ३—गन्ना पेरने का काम बैलों से लि . जा रहा है। ४—घरेलू आवश्यकता की चीज़ें। घर वाली बाज़ार से घर ला रही है।



पेरेग्वे नदी के तट पर कन्सेप्शन नगर तक स्थित समुद्र से १२००
मील की दूरी पर जहाज़ यरबा माटी के बोरे और केले
लादने के लिये चले आते हैं।



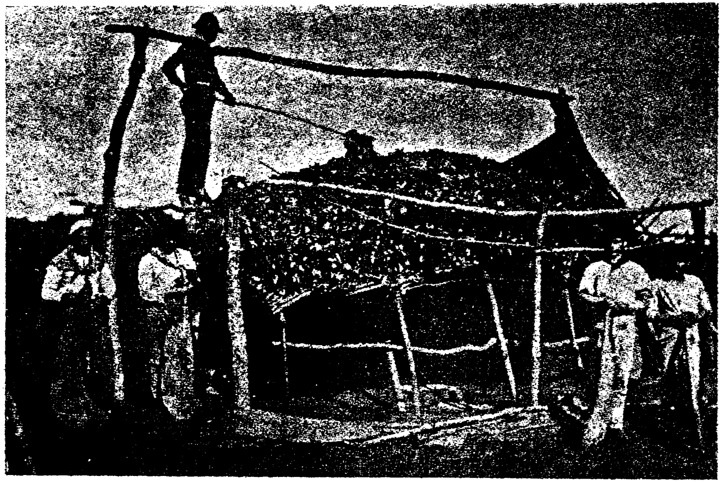
पेरेग्वे के प्राचीन निवासी लेंगुश्रा इंडियन हाकी के समान एक प्रकार का खेल खेलते हैं।



पेरेग्वे की एक बड़ी जागीर का एक दृश्य।



यरबा माटी पीने का ढंग ।



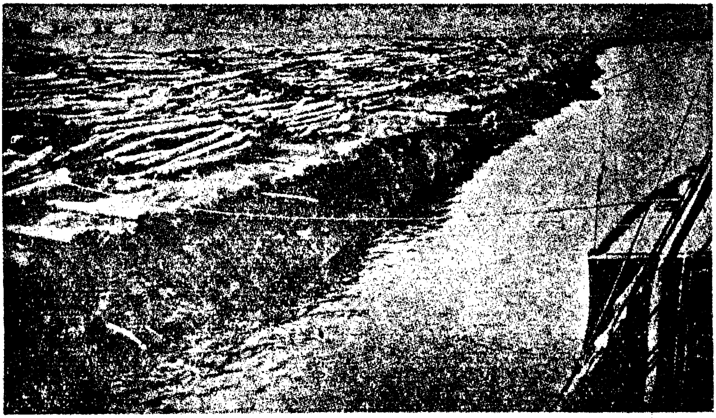
दक्षिणी अमरीका की चाय (यरबा माटी) की पत्तियाँ धीमी सुलगती हुई आंच से सुखाई जा रही हैं। यरबा माटी का वृक्ष २४ फुट तक ऊँचा होता है। पत्तियाँ गहरी हरी और चमकीली होती हैं।



चाको प्रदेश में सड़कों का अभाव है। यहां के निवासी और उनकी बैल गाड़ी दुर्गम स्थान में नया मार्ग बना कर यात्रा कर लेते हैं।



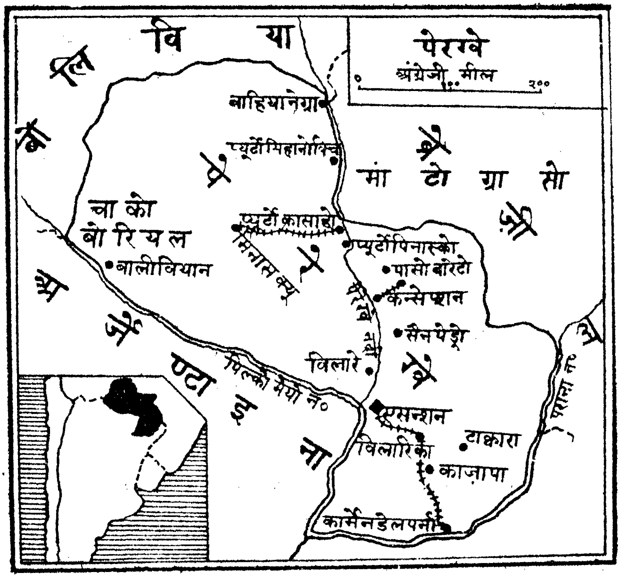
यरवा माटी की पत्तियाँ भारी लकड़ी से कूटी जाती है। टहनियाँ अलग करके जलाने के काम में आती है।



इन लट्ठों की छाल से चमड़ा कमाने का मसाला तयार किया जाता है। इनकी लकड़ी इतनी मजबूत होती है कि कुल्हाड़ी तोड़ कहलाती है। यह इतनी भारी होती है कि पानी में बहाने के लिये इसके नीचे दूसरी हलकी लकड़ी लगानी पड़ती है।



पेरेग्वे की एक महिला बाज़ार से आवश्यक सामान मोल लेकर घर आ रही है। उसके हाथ में एक पपीता है। सर पर फली, मका का भुट्टा आदि कई चीज़ें हैं।



पेरग्वे
अंग्रेजी मील
२००
बोलिविया
बाहियानेग्रा
मांटोग्रासो
चाको बोरियल
प्यूर्टो कासाडो
प्यूर्टो पिनास्को
बालीवियान
कन्सेप्शन
सैन पेड्रो
विलारे
पिल्को मेयो न०
एसन्शन
विलारिका
टाक्वारा
काज़ापा
कार्मेन डेल पर्ना